>

Title: Need to improve primary education in the country.

श्री रामजीलाल सुमन (फ़िरोज़ाबाद) : महोदय, प्राथमिक शिक्षा के संबंध में जून, 2007 में एक संस्था यूनेस्को के हवाले से कहा गया था कि भारत प्राथमिक शिक्षा में सिर्फ युगांडा से ही बेहतर है। इसके कई कारण गिनाए गए थे जिनमें से प्रमुख है कि 25 फीसदी शिक्षक कक्षाओं में बच्चों को पढ़ाने विद्यालय आते ही नहीं, वे घर बैठे निर्धारित पूरी तनख्वाह कागजी कार्यवाही पूरी कर ले लेते हैं।

इससे बड़ी विडम्बना कोई और नहीं हो सकती है कि एक ओर तो हम अगले दस वर्षों में महाशक्ति बनने का दावा कर रहे हैं और दूसरी ओर देश की बुनियाद को मजबूत बनाने वाली प्राइमरी शिक्षा की बदहाली पर हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। उक्त रिपोर्ट में शिक्षकों की गैर हाजिरी के लिए जो कारण गिनाए गए हैं, वे कोई नए नहीं हैं। बात चाहे कम वेतन की हो या प्रोत्साहन के अभाव की या फिर निगरानी की लचर प्रणाली की, ये सभी कारण सर्वविदित हैं और वर्षों से यूं ही बरकरार हैं। शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र को सबल बनाने का यह ढुलमुल रवैया भारत को किस प्रकार अगले दस वर्षों में महाशक्ति के रूप में परिलक्षित कर पाएगा, यह देशहित में कतई नहीं है।

मेरा सदन के माध्यम से आग्रह है कि सरकार प्राइमरी शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त कठिनाइयों को दूर करे और हर गरीब व्यक्ति को शिक्षा सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक कदम उठाए।

सभापति महोदया : श्री राम कृपाल यादव - उपस्थित नहीं।